❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। - सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें।

O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 41, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 नवम्बर, 2017 से रविवार 3 दिसम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विशेष सामयिक लेख

पर खिलजी तो अभी भी जिन्दा है !

... 'अलाउद्दीन वास्तव में बर्बर अत्याचारी था। उसके हृदय में न्याय के लिए कोई जगह नहीं थी।' भंसाली ने इन तथ्यों को जरूर पढ़ा होगा। इतिहास का आदर्श सत्य है और बाजार का सत्य मुनाफा। तो रानी पद्मावती के चरित्र को कोई कैसे अपने मुनाफे का सौदा बना सकता हैं?....

महारानी पद्मावती को लेकर पिछले काफी दिनों से देश के नेता, पत्रकार और इतिहासकार अतीत के काल खण्ड पर बहस किये बैठे हैं। मुद्दा है फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली की आगामी फिल्म पद्मावती। कहा जा रहा है कि इस फिल्म में कुछ आपत्तिजनक सीन है जिसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इस कारण राजनीति और फिल्म का बाजार गर्म है। साथ ही सवाल भी उठ रहे हैं कि भारत का इतिहास अब फिल्म निर्माता लिखेंगे या राष्ट्रवादी कलमकार? इसमें पहली बात तो यह है कि हमारे भारत का मध्यकालीन इतिहास बहुत ही पीड़ादायक रहा है जिसके कारण यहाँ अनेक कुरीतियों का जन्म हुआ, सतियों ने अपने सम्मान की खातिर अपनों प्राणों को अग्नि की दहकती भट्टियों में स्वाह किया। अनेक राजाओं, वीरों और गुरुतेग बहादुर जैसे भारत माँ के सपूतों ने अपने सिर मुस्लिम हमलावरों के सामने झुकाने के बजाय कटा दिए ताकि इस देश का अस्तित्व, इसका धर्म और संस्कृति बची रहे।

महाराणा प्रताप और अकबर को लेकर पिछले दिनों नेतागण भिड़ते दिखाई दिए, टीपू सुल्तान को लेकर जुबानी जंग चली, ताजमहल पर बयानों के ताज नेताओं के सर पर खूब सजे, इस बार भी पद्मावती को लेकर एतिहासिक संघर्ष जारी है। हरियाणा के एक नेता ने तो फिल्म निर्माता को सिर काटने की धमकी के साथ आवेश में आकर 10 करोड़ का इनाम भी बोल दिया। लेकिन यदि इस पूरे मामले पर गौर करें तो देखेंगे कि एक भी बयान खिलजी के ऊपर आया हो? तत्कालीन सल्तनत के शासक अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भारत के बहुसंख्यकों हिन्दुओं पर किए गए अत्याचारों के खिलाफ किसी ने कोई बयान दिया हो? इतिहास का मध्यकाल भारत के तन-मन को तोड़ने की दु:ख भरी कहानी है। इस कथा के तथ्य विदेशी हमलावरों के खूनी चरित्र का जिन्दा दस्तावेज भी हैं। लेकिन आज उसे धर्मनिरपेक्षता के धागों में पिरोकर पहनाया जा रहा है।

सूरज के उदय और अस्त होने के साथ-साथ काल गुजरता गया, देश को आजादी मिली हम आधुनिकता और स्वतंत्रता के रथ पर एक संविधान लेकर सवार हुए लेकिन 70 वर्ष के बाद एक बार फिर हम 721 वर्ष पूर्व हुए हजारों सतियों के बलिदान के इतिहास को लेकर खड़े हैं। लेकिन इस बात को कौन भूल सकता है कि बर्बर सुल्तान ने चित्तौड़ को घेर लिया था। जिस कारण राणा रतन सिंह की पत्नी रानी पद्मावती को आग में कूदना पड़ा था। यह सब इसी इतिहास का आदर्श सत्य है पर फिल्म और राजनीति का बाजार इतिहास नहीं अपना फायदा देख रहा है। सात सौ साल पहले

का खिलजी भी गलत था जो रानी पद्मावती को जबरन पाने की कोशिश में लगा था पर सवाल ये भी है कि आजके आधुनिक खिलजी कहाँ तक सही हैं जो आये दिन बहन-बेटियों को हड़पने की कोशिश में लगे हैं?

इसी वर्ष की कुछ बड़ी घटनाओं पर नज़र डालें तो जुलाई माह में दिल्ली में यमुनापार के मानसरोवर पार्क इलाके में आदिल उर्फ मुन्ने खान ने रिया गौतम पर ताबड़तोड़ चाकू से वार कर दिया था। खिलजी की तरह एकतरफा प्यार में सनकी आशिक ने रिया गौतम की हत्या कर दी थी। सड़क पर पब्लिक देखती रही और आरोपी दिन दहाड़े एक लड़की को हमेशा के लिए इस दुनिया से विदा कर गया था। इसके बाद उसी माह उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में एक और खिलजी अदनान खान ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर हिना तलरेजा की रेप के बाद हत्या कर दी थी। इसी माह जमशेदपुर के मेडीट्रीना हास्पिटल में मैनेजर के पद पर कार्यरत चयनिका कुमारी की हत्या डॉ. मिर्जा रफीक ने इस वजह से कर दी क्योंकि वह उसका मजहब स्वीकार नहीं कर रही थी। दो दिन पहले मुजफ्फनगर में एक अन्य खिलजी उबैद उर रहमान उर्फ कबीर ने एक हिन्दू लड़की को अपने परिवार के साथ मिलकर जबरन जहर दे दिया। ऐसी दो चार नहीं हर दूसरे तीसरे दिन किसी न किसी रूप में कोई न कोई पद्मावती इन आधुनिक खिलजियों का शिकार हो रही हैं।

हृदय नारायण दीक्षित के अनुसार इतिहास बोध राष्ट्र निर्माण का मुख्य सूत्र है। अलाउद्दीन खिलजी हुकूमत का समय सिर्फ सात सौ साल पुराना है। विवादित फिल्म की कथा इसी हुकूमत का एक अंश है। खिलजी हुकूमत की शुरुआत जलालुद्दीन खिलजी से हुई। उनके पूर्वज तुर्किस्तान से भारत आए थे। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव ने 'भारत का इतिहास' में लिखा है, 'हिन्दुओं का दमन करने की उसकी नीति क्षणिक आवेश का परिणाम नहीं, अपितु निश्चित विचारधारा का अंग थी।' सर वूल्जे हेग ने लिखा है 'हिन्दू सम्पूर्ण राज्य में दुख और दरिद्रता में डूब गए.' इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है कि समाज के प्रतिष्ठित लोग 'अच्छे कपड़े नहीं पहन सकते थे।' इतिहासकार वी.ए. स्मिथ ने लिखा 'अलाउद्दीन वास्तव में बर्बर अत्याचारी था। उसके हृदय में न्याय के लिए कोई जगह नहीं थी।' भंसाली ने इन तथ्यों को जरूर पढ़ा होगा। इतिहास का आदर्श सत्य है और बाजार का सत्य मुनाफा। तो रानी पद्मावती के चरित्र को कोई कैसे अपने मुनाफे का सौदा बना सकता हैं?

खिलजी का उद्देश्य राणा रतन सिंह की पत्नी रानी पद्मिनी को पाना था। इस पर इतिहासकारों में मतभेद हैं। डॉ. के. एस. लाल व हीरा चंद्र ओझा आदि ने इसे सही नहीं माना। सुल्तान को कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। अमीर खुसरो ने पूरा युद्ध देखा था। उसने लिखा है कि केवल एक दिन में तीस हजार राजपूत मारे गए थे। सुल्तान ने भयंकर रक्तपात किया। विजय के बाद उसने चित्तौड़ का नाम अपने पुत्र के नाम पर खिजराबाद रखा। रानी पद्मावती भी युद्ध में शामिल थीं। उन्होंने हजारों राजपूत स्त्रियों के साथ 'जौहर' बलिदान किया। यह बात अलग है कि रानी पद्मावती इतिहास की पात्र हैं या नहीं, लेकिन भारत में वह श्रद्धा की पात्र जरूर हैं वह इतिहास की एक आदर्श नारी है वह कोई राजनीति की गाय या बकरी का मुद्दा नहीं जिस पर इन कथित बुद्धिजीवियों द्वारा बहस की जाए!

-विनय आर्य, महामन्त्री

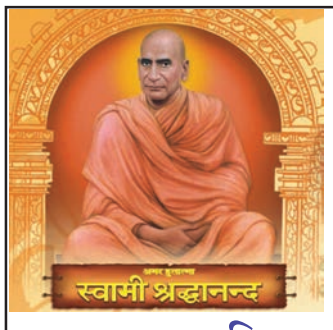

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के
91वें बलिदान दिवस पर
भव्य शोभायात्रा एवं जनसभा
रविवार 25 दिसम्बर, 2017
बलिदान भवन में यज्ञ : प्रातः 8 बजे
शोभायात्रा प्रारम्भ : प्रातः 10 बजे
विशाल सार्वजनिक सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली : दोपहर : 1 बजे से सायं 4 बजे
आर्यजन अभी से तैयारी आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने हेतु पहुंचें। *निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली*

वेद-स्वाध्याय

त्रिविध महान् ऐश्वर्य

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्।। -ऋ. 1/57/1
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **यस्य राधः** = जिस प्रभु का ऐश्वर्य **प्रवणे अपामिव** = नीची भूमि पर बहते पानी की भांति **दुर्धरम्** = दुर्धर है, रोका नहीं जा सकता और जिसका ऐश्वर्य **विश्वायु** = सबके लिए **शवसे** = सबका बल बढ़ाने के लिए **अपावृतम्** = खुला पड़ा है उस **बृहते बृहद्रये** = अनन्त गुणवाले और अनन्त धनवाले **सत्यशुष्माय** = सत्य-बलयुक्त **मंहिष्ठाय** = महादानी **तवसे** = महान् प्रभु के लिए **मतिं प्रभरे** = मैं अपनी बुद्धि समर्पण करता हूं।

विनय- हे परमदानी! मैं तेरे सामने झुकता हूं। मेरा मन और बुद्धि तेरे सामने झुकते हैं। तेरे अपरिमित ऐश्वर्यों की जो हम पर अनवरत वर्षा हो रही है उसे देखकर मैं अवाक् और स्तब्ध रह गया हूं। मेरी बुद्धि तेरी महत्ता, तेरी अनन्तैश्वर्यता को समझ सकने से भी हार मान रही है। तू गुणों में अनन्त है, तू आकार में अनन्त है, तेरा धन अनन्त है और तेरा बल कभी झूठा नहीं हो सकता। तेरा बल जहां प्रयुक्त होता है वह अवश्य सफल होता है। तू सच्चे बलवाला है और फिर तू परम दानी है। अपने अनन्त ऐश्वर्य की हम पर इसलिए वर्षा कर रहा है कि उसे पाकर हममें भी बल बढ़े, आत्म-शक्ति बड़े, हम भी सच्चे बलवाले हो जाएं। तेरा यह ऐश्वर्य हमारे लिए खुला पड़ा है और यह विश्वभर के लिए खुला पड़ा है, सबके लिए खुला पड़ा है। जो चाहे इसे यथेच्छ लेकर अपना बल बढ़ा लेवे। तनिक देखो, इस ब्रह्माण्ड का स्थूल ऐश्वर्य, अद्भुत मानसिक ऐश्वर्य और अलौकिक अपार शक्तिवाला आत्मिक ऐश्वर्य-ये सब एक-से-एक ऊंचे, एक-से-एक अधिक शक्ति देने वाले ऐश्वर्य हम पर बरस रहे हैं। ऐश्वर्य की कमी नहीं है, हमारी ग्रहण-शक्ति की ही कमी है। ऐश्वर्य को लूटो और इससे अपनी शक्ति बढ़ाओ। अरे, यह तो बेरोक-टोक हमारी ओर बह रहा है। जैसेकि नदी का जल नीची भूमि पर स्वभावतः जाता है, उसे रोका नहीं जा सकता, वैसे ही परम प्रभु का ऐश्वर्य उनकी सर्वशक्तिमत्ता और उनकी बृहत्ता की ऊंचाई से हम नीचे खड़े अल्पशक्तिवालों की ओर स्वभावतः आ रहा है। यह तो आ ही इसलिए रहा है कि हमारी कमी, हमारी निर्बलताएं भर जाएं। प्रभु का ऐश्वर्य-जल हमें भरपूर करने के लिए, हमें पूर्ण कर देने के लिए नीचे अनवरत खुला बह रहा है। ओह! यह अनन्त काल से बह रहा है और इस ऐश्वर्य का कहीं अन्त नहीं है। इसे देखकर हे परम दानी! मैं तेरे चरणों में गिर पड़ा हूं-सर्वभाव से तेरे चरणों में गिर पड़ा हूं। बुद्धि तक मेरा सब कुछ तेरे समर्पित है, हे महादानी!

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजनीति के तराजू में आदर्श महापुरुष

...हम राजनीति को धर्म से अलग रखें तभी धर्म के संस्कारों का बीजारोपण आगे आने वाली पीढ़ी में कर पाएँगे। इसलिए आवश्यक है कि धर्म और राजनीति के मूल तत्त्व समझ में आ जाए। धर्म और राजनीति का अविवेकी मिलन दोनों को भ्रष्ट कर देता है, फिर भी जरूरी है कि धर्म और राजनीति एक दूसरे से सम्पर्क न तोड़ें, मर्यादा निभाते रहें।...

अगला लोकसभा चुनाव किसके पक्ष में होगा अभी इसकी महज परिकल्पना ही की जा सकती है किन्तु राजनेताओं की तिकड़मबाजी अभी से शुरू होकर आदर्श महापुरुषों के चरित्र और सम्मान पर आन टिकी है। यह दुखद घड़ी है कि अखिलेश यादव की ओर से सैफई में योगिराज श्रीकृष्ण की 50 फुट ऊंची प्रतिमा लगवाने के बाद अब मुलायम सिंह ने कृष्ण को पूरे देश का आराध्य बताया है। उसने आस्था की तराजू पर रखकर राम और कृष्ण के आदर्श तोलकर बताया कि श्रीकृष्ण ने समाज के हर तबके को समान माना और यही कारण है कि कृष्ण को पूरा देश समान रूप से पूजता है, जबकि राम सिर्फ उत्तर भारत में पूजे जाते हैं। दरअसल मुलायम सिंह यादव राम और कृष्ण की तुलना कर अपनी धार्मिक राजनीति चमका रहे हैं शायद वे यह बताना चाह रहे हैं कि मर्यादा पुरषोत्तम राम क्षेत्रीय भगवान है और श्रीकृष्ण राष्ट्रीय? पर वह भूल गये कि हमारा पूरा देश जन्माष्टमी हो या रामनवमी समान आस्था और विश्वास के साथ मनाता आया है।

सब जानते हैं कि यह भारत की राजनीति है जब यहाँ सत्ता पाने का कोई चारा दिखाई न दे तो धर्म का ढ़ोल बजा दिया जाये। यदि धर्म का ढ़ोल कमजोर पड़े तो जाति और क्षेत्रवाद में लोगों को बाँट दिया जाये यदि इनसे भी काम ना चले तो भारतीय संस्कृति जिसमें उसके महापुरुष जन्में हों, उनका एक मर्यादित इतिहास रहा हो तो क्यों न उनका इतिहास उधेड़कर अपने तरीके से बुना जाये? चाहे वह युगों-युगान्तरों पूर्व का ही क्यों न हो?

मुलायम सिंह यादव स्वयं को समाजवाद के अग्रणी नेता बताते रहे हैं। समाजवाद का अर्थ यही होता होगा कि समाज में सब में समान हो। कोई छोटा-बड़ा नहीं हो, इसमें चाहे आम समाज हो या महापुरुष। खुद मुलायम सिंह के गुरु लोहिया भी राम, कृष्ण और राजा शिव से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे उन्होंने कहा था कि 'हे भारतमाता! हमें शिव का मस्तिष्क दो, कृष्ण का हृदय और राम का कर्म और वचन और मर्यादा दो। लेकिन अब राम भाजपा का हो गया और श्रीकृष्ण समाजवादियों के। अब भला समाजवादियों का कृष्ण राम से कम कैसे आँका जाये? लगता है अब धार्मिक आस्थाओं का मूल्य वोट और नोट से ही चुका-चुकाकर जीना पड़ेगा। कारण धर्म पर बाजार और राजनीति जो हावी है। आपको अपने भगवान के बारे में जानना है तो राजनेता बता रहे हैं और यदि इसके बाद उनके दर्शन करने हैं तो पैसे चुकाने पड़ेंगे ये आपको तय करना है कि कितने रुपये वाला दर्शन करना है और आपका भगवान राजनितिक तौर पर कितना मजबूत! यह जानना है तो नेता बता रहे हैं।

महात्मा गांधी ने गीता को तो स्वीकार किया उसे माता भी कहा लेकिन गीता को आत्मसात करते उनके अन्दर हिचक दिखाई दी इससे गाँधी की अहिंसा के मूल्य खतरे में पड़ जाते थे। उन्होंने कहा यह लड़ाई कभी हुई ही नहीं यह मनुष्य के भीतर अच्छाई और बुराई की लड़ाई है। यह जो कुरुक्षेत्र है वह अन्दर का मैदान है। कोई बाहर का मैदान नहीं है। अब सवाल यह भी है कि कला से लेकर संस्कृति तक क्या अब भगवान भी राजनीति के कटघरे में खड़े से नजर नहीं आ रहे हैं? यह स्थिति क्यों बनी और क्या ऐसी ही स्थिति बनी रहेगी? अब हमारे सामने आगे की राह क्या है? अभी किसी ने सुझाई नहीं है। अलग-अलग काल में धर्म और राजनीति की अलग-अलग भूमिका रही है। लेकिन वर्तमान समय इन दोनों को एक जगह मिलाकर व्याख्या कर रहा है। जिसे अभिव्यक्ति की आजादी का नाम दिया जा रहा है। ये नेता महापुरुषों का चरित्र बिगड़कर क्या साबित करना चाह रहे हैं अभी किसी को पता नहीं!

आधुनिक जीवनशैली के चलते महापुरुषों से लेकर धर्म को अपने अनुसार बदलने पर तुले हैं, इतिहास से लेकर अपने नायकों अधिनायकों पर सवाल उठा रहे हैं पर यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि यह बदलाव हमारे लिए भविष्य में सकारात्मक होगा या नकारात्मक? क्योंकि यहाँ सबसे बड़ा सवाल यह है कि बिगाड़ तो रहे हैं लेकिन बना क्या रहे हैं? निश्चित रूप से अब तक जो भी जवाब या स्वरूप सामने आये हैं वह नकारात्मक हैं। इस कारण अब हमें धर्म की व्याख्या करते समय इस बात का ध्यान आवश्यक रूप से रखना होगा कि हम राजनीति को धर्म से अलग रखें तभी धर्म के संस्कारों का बीजारोपण आगे आने वाली पीढ़ी में कर पाएँगे। इसलिए आवश्यक है कि धर्म और राजनीति के मूल तत्त्व समझ में आ जाए। धर्म और राजनीति का अविवेकी मिलन दोनों को भ्रष्ट कर देता है, फिर भी जरूरी है कि धर्म और राजनीति एक दूसरे से सम्पर्क न तोड़ें, मर्यादा निभाते रहें।

संकीर्ण भावनाओं का इस्तेमाल पिछले कई दशकों से भारतीय राजनीति का हिस्सा बना हुआ है, जिससे देश और समाज को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। नेताओं को अपने राजनितिक युद्ध में अपने महापुरुषों को नहीं घसीटना चाहिए हो सकता है एक नेता का दूसरे नेता से कोई वैचारिक विरोध हो पर राम का कृष्ण से कैसा विरोध? हर कोई अपने-अपने समय पर इस पावन भारत भूमि पर आया, अपने विचारों से अपनी शिक्षाओं से समाज को दिशा दी है, सामाजिक, नैतिक मूल्य मजबूत किये, आचरण सिखाया, आगे चले और बिना किसी जातिगत भेदभाव के आगे बढ़े। अब हमें अपने व्यवहार व आचरण को लेकर सोचना होगा और इस बात को ध्यान में लाना होगा कि यदि हमने महापुरुषों को क्षेत्र या जातिवाद या फिर दलीय राजनीति में विभाजित किया तो क्या हम भी विभाजित हुए बिना रह पाएंगे?

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

खुदीराम बोस जयन्ती (3 दिसम्बर) पर विशेष

वह तो देश के लोगों के हाथों खरीदा जा चुका था

खुदीराम बोस की बड़ी बहन अपरूपा देवी ने अपने एक संस्मरण लेख में खुदीराम का जिक्र करते हुए लिखा है-

3 दिसम्बर 1889 को शाम पांच बजे के आस-पास खुदीराम पैदा हुआ था। वह हम लोगों के लिए, अपार खुशी का दिन था। उसके पहले हमारे दो भाई एक- एक करके मर चुके थे, लेकिन हम तीन बहनें बिल्कुल ठीकठाक बची रहीं, सो जब वह (हमारा भाई) पैदा हुआ तो हम बहुत खुश हुए। मैंने अपने नवजात भाई को तीन मुट्ठी खुद्दी (चावल के छोटे-छोटे टुकड़े) देकर खरीद लिया। हमारे समाज में एक रिवाज़ था कि अगर किसी घर में लड़के जीवित नहीं रहते तो मां उसे बेचने का स्वांग करती है। कोई भी उसे खुद्दी या कुछ ऐसी चीज़ देकर खरीद सकता है। सो मैंने ही अपने भाई को तीन मुट्ठी खुद्दी देकर खरीद लिया, इसलिए उसका नाम खुदीराम पड़ा।

मेरे पिता त्रैलोक्यनाथ बोस, अपने जन्म स्थान मोहबनी गांव को छोड़कर मिदनापुर शहर के हबीबपुर मुहल्ले में आ बसे थे। वह नारजोल राजा के दरबार में तहसीलदार थे। हम सभी मिदनापुर में ही पैदा हुए थे। हमारी मां लक्ष्मीप्रिया देवी का मायका कलाग्राम था। हम तीन बहनें थीं-सरोजनी, ननीबाला और मैं। बाद में मेरी शादी हो गई। खुदीराम के जन्म के, कुछ दिनों के बाद मुझे अपनी ससुराल हाटगछिया जाना था। लेकिन जब भी मेरी ससुराल जाने की बात होती, दुबला-पतला साफ रंग और सर पर मुट्ठी भर काले घुंघराले बालों (जिन्हें मुंडन करवाने के लिए रख छोड़ा गया था) वाला खुदीराम मेरी छाती से आ चिपकता और अपनी नन्ही-नन्हीं बांहों से जकड़कर मुझे जाने नहीं देता, वह बुरी तरह रोता-इतना कि मुझे भी रुलाई आ जाती। खुदीराम के जन्म के एक वर्ष बाद, आठ महीने के बाद मेरा बेटा ललित पैदा हुआ। शुक्रवार 18 अक्टूबर 1895 को हमारी मां का देहांत हो गया। यद्यपि हमारे पिता ने दूसरी शादी कर ली, लेकिन मां का सदमा उन्हें इतना गहरा लगा था कि कुछ महीनों के बाद वे चल बसे। उस समय तक ननीबाला की भी शादी नहीं हुई थी और खुदीराम करीब छह बरस का था। ये दोनों बच्चे असहाय हो गए। स्वाभाविक ही था कि उन दोनों की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ जाती। तब हम लोग मिदनापुर से, हाटगछिया आ गए। खुदीराम मेरे संरक्षण में पलने लगा। उस वक्त वह साफ रंग का दुबला-पतला बच्चा था, जिसके माथे पर काले घुंघराले बालों की लटें थीं और जिसके घुटनों में लोहे का कड़ा था-जो उसे बीमारी से बचाने के लिए था। हम लोग हाटगछिया में अधिक दिन तक नहीं रहे, मेरे पति का तबादला तामलुक हो गया। वहां खुदीराम और ललित, दोनों को तामलुक हैमिल्टन हायर इंगलिश स्कूल में दाखिला दिलवा दिया गया।

खुदीराम बचपन से ही बहुत शरारती था, उसका पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं रहता था-सिर्फ खेल और खेल! फिर एक वक़्त आया कि उसका ध्यान पढ़ाई की ओर मुड़ गया। लगता था कि वह समाधिस्थ हो गया है।

1904 में हम लोग मिदनापुर आ गए। ललित और खुदीराम को मिदनापुर कॉलेजिएट स्कूल के सातवें क्लास में दाखिला दिलवाया गया। इन्हीं दिनों खुदीराम में शारीरिक व्यायाम के प्रति आकर्षण पैदा हुआ। पैरेलल वार से उसे खास लगाव था। जब तत्कालीन गवर्नर मिदनापुर आए, तब जिम्नास्टिक का प्रदर्शन हुआ। खुदीराम का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा। उसी प्रदर्शन की बदौलत गवर्नर ने, खुदीराम के ड्रिल मास्टर रामचन्द्र सेन के वेतन में पांच रुपयों का इजाफ़ा कर दिया था। एक दिन वह हमें बिना बताए कहीं चला गया। काफी दिनों तक उसकी कोई ख़बर नहीं मिली। फिर एक दिन उसकी चिट्ठी मिली-''मेरी प्यारी बहन, अब यह मेरे लिए सम्भव नहीं है कि मैं एक साधारण गृहस्थ की जिन्दगी जिऊं और न ही मेरी आगे पढ़ाई जारी रखने की ही इच्छा है तो क्यों मैं आप पर बोझ बनकर रहूं? सो मैंने संन्यास लेने का फैसला कर लिया है।''

तो खुदीराम, मेरा प्यारा छोटा भाई, संन्यासी बनने निकल पड़ा! लेकिन नहीं, वह ईश्वर की खोज में नहीं निकला था, वह तो अपने देश के लोगों को निकट से जानने-समझने निकला था।

काफ़ी दिनों के बाद वह लौटकर आया, उसने बताया कि यहां से निकलने के बाद वह बांकुरा के एक बहुत गरीब किसान के घर रहने लगा था। उस घर का मुखिया बूढ़ा और अशक्त था। उसके पास ज़मीन तो थी, लेकिन काम करने वाले हाथ नहीं थे, सो वह परिवार भूखों मर रहा था। वहां कोई नहीं था, जो उनकी मदद करता। खुदीराम से यह देखा नहीं गया। वह वहीं रहकर वह सब कुछ करने लगा जो उसने उसके पहले कभी नहीं किया था। पूरे एक महीने तक वह खेत की जुताई-बोआई करता रहा। उनके लिए और भी आवश्यक व्यवस्था करके वह मिदनापुर वापस आ गया। इस दौरान लगातार अथक परिश्रम की वजह से उसका स्वास्थ्य चौपट हो गया था। जिस स्वास्थ्य को उसने बहुत परिश्रम और लगन से तैयार किया था, वह नष्ट हो गया था। पैरेलल वार, डम-बेल्स, जिम्नास्टिक, ड्रिल और लाठी चलाने के साथ उसने अपने शरीर को बहुत शक्तिशाली बना लिया था। लेकिन इसकी उसे फिक्र नहीं थी, क्योंकि उसने वह पा लिया था जिसकी उसे चाह थी।

फिर कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिससे मैंने समझना शुरू कर दिया था, कि वह मातृविहीन लोहे के कड़े पहनने वाला, घुंघराले बालों वाला खुदीराम मेरी पकड़ से बाहर जा रहा है। तब मैं भयभीत, उसके ऊपर निगरानी रखने लगी। उसके बारे में कुछ भी सुनती तो बेचैनीपूर्वक सारी बातें जानने का प्रयास करती और उन सब बातों को अपने हृदय की गहराइयों में छुपाकर रखती-अपने पति से भी और पुलिस की पूछताछ से भी! बाद के दिनों में तलाशी के दौरान पुलिस उसकी आखिरी चिट्ठी मुझसे छीन ले गई। उसकी आखिरी निशानी-घर, जो कभी हमारा था...पंचेतगढ़ के जमींदार ने अपना बकाया वसूलने के लिए नीलामी में बेच दिया।

''खुदीराम को मैंने तीन मुट्ठी खुद्दी देकर खरीदा था। मेरे मन की दबी चाह यही थी, कि वह सिर्फ मेरा होकर रहे। उस पर सिर्फ मेरा आधिकार रहे। लेकिन मुझे इसका पता नहीं था, कि वह तो देश के लोगों के हाथों खरीदा जा चुका है। मैंने उसे तीन मुट्ठी चावल के टुकड़ों से खरीदा था, लेकिन देश के निर्भीक लड़कों ने उसे मुट्ठी भर खून से खरीद लिया था।''

साभार : खुदीराम बोस, एक अद्भुत प्रेरक व्यक्तित्व

बोध कथा

सावधान ! मृत्यु का हिमपात होने वाला है

पुराने समय की एक कहानी है। तब लोग कश्मीर जाने के लिए मोटरों में नहीं, तांगों पर जाते थे। रावलपिंडी में एक सेठ साहब पहुंचे। एक तांगेवाले से बोले-''क्यों भाई! कश्मीर चलना है, कितना किराया लेगा?''

तांगेवाले ने देखा कि सेठ धनी पुरुष है; बोला-''किराया क्या लेना है सेठ जी, तांगे और घोड़े का जो खर्च आयेगा। वह दे देना। घोड़े का चारा दिलवा देना। आवश्यकता पड़े तो तांगे की मरम्मत करा देना।''

सेठ ने कहा-''यह तो सस्ती सवारी है, चल!''

सेठ बैठ गये। चला तांगा; पहुंचा कोहमरी में। तांगेवाले ने कहा-''सेठ जी! आप है कुलीन सभ्य पुरुष। तांगे की गद्दियां हो गई हैं पुरानी। आपकी शान के योग्य नहीं। यदि आप कहें तो कोहमरी में दो दिन रहकर गद्दियां बदला लें।''

सेठ ने कहा-''अवश्य!'' बदलवाने के लिए रुपये दे दिये और गद्दियां ठीक हो गई। फिर रोग़न खराब लगने लगा। सेठ ने रुपये दे दिये और कहा-''रोग़न भी नया कराओ।''

नया रोग़न होने लगा। दो दिन के स्थान पर बारह दिन व्यतीत हो गये। पास से जाने वालों ने कहा-''यात्री! तू किस झंझट में फंस गया? अरे, आकाश में मेघ एकत्रित हो रहे हैं। यदि अधिक विलम्ब करेगा तो मार्ग में ही हिमपात हो जायेगा और श्रीनगर नहीं पहुंच सकेगा।''

सेठ ने कहा-''श्रीनगर मुझे जाना है अवश्य, परन्तु तांगा तो ठीक करा लूं।''

तब और कुछ दिन बीत गये। रंग-रोग़न सब-कुछ हो गया, तांगा बन गया। निश्चित हुआ कि दूसरे दिन चलेंगे, किन्तु रात को आया तूफ़ान। वर्षा हुई वेग से, रंग-रोग़न सब उतर गया। तांगे की अवस्था बिगड़ गई, इसलिए तीसरे दिन से फिर रंग-रोग़न होने लगा। तांगे वाले ने कहा-''सेठ जी! तांगे को रखने के लिए कोई मकान तो है नहीं। फिर तूफ़ान आ गया तो रोग़न फिर खराब हो जायेगा। आप कहें तो तांगे को रखने के लिए एक मकान बनवा लिया जावे।''

सेठ ने कहा- ''हां, अवश्य बनवाओ।''

लोगों ने कहा-''यात्री, किस धंधे में पड़ा है तू? अरे, शरद् ऋतु समीप आ रही है। श्रीनगर के मार्ग हिम से रुक जायेंगे।''

सेठ ने कहा-''ठीक है, किन्तु पहले तांगा तो बन जाये।''

इस तरह कई दिन व्यतीत हो गये। तब एक भारी तूफ़ान उठा, हिम का तूफ़ान। पहाड़ और जंगल हिम से भर गये। सेठ जी श्रीनगर में पहुंच नहीं सके; माथा पकड़कर बैठ गये।

आप कहेंगे बहुत ग़लती की सेठ जी ने। हां भाई! भूल की उस सेठ ने, परन्तु तुम वह भूल न करो। तुम्हारा यह शरीर किराये का तांगा है। किराया दो तो यह चलता है। चार दिन रोटी न खिलाओ तो अन्दर से शब्द आवेगा-''निकल जाओ यहां से!'' दो दिन पानी न पिलाओ तो रजिस्टर्ड नोटिस आवेगा-''निकलो! तुम्हारे लिए स्थान नहीं।'' यदि थोड़ी हवा न हो तो नोटिस तार द्वारा मिलेगा-''निकलो!''

अरे, इस शरीर का स्वामी मैं कैसे हूं? मेरा यह है नहीं, मैं तो किरायदार हूं, किराया देता हूं, रहता हूं। कभी इसमें मलेरिया आ घुसता है, कभी खांसी-जुकाम। कोई मुझसे पूछता नहीं कि अन्दर आऊं या न आऊं। फिर मैं स्वामी कैसे हुआ? मैं स्वामी हूं नहीं।

ऐ किराया देकर इस तांगे में यात्रा करने वाले! याद रख, मृत्यु का हिमपात होने वाला है। तू यहां तांगे को संवारने, रोग़न कराने और सजाने बैठा है, वहां तेरी मंज़िल का मार्ग बन्द होने वाला है। अब सचेत हो, यात्री! इस पवित्र गायत्री मंत्र का सहारा लेकर मंज़िल की ओर बढ़-

भ्रमते-भ्रमते देह-रथ, हुआ है चकनाचूर। प्रीतम नगरी जीव रे, अभी बड़ी है दूर।।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

महारानी पद्मनी (पद्मावती)

देश वासियो! सुनो ध्यान से, सच्ची एक कहानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
रूपवती, गुणवती, विदूषी, ईश भक्त तपधारी थी।
सदाचारिनी व्रत धारिनी, वीर प्रसूनी नारी थी।।
साहस बल की महापुंज थी, समझदार वह भारी थी।
भीम सिंह राणा की पत्नी, देवी परोपकारी थी।।
वीर जवानो! मत भूलो, भारत पुत्री मर्दानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
अलाउद्दीन खिलजी ने जब, चित्तौड़ नगर को घेरा था।
एक लाख सेना थी संग में, खल ने डाला डेरा था।।
कलह फूट थी भारत में, मूढ़ों का यहां बसेरा था।
रात अंधेरी छाई थी, ना आता नजर सवेरा था।।
यहां सैकड़ों शासक थे, पनपाते थे शैतानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
अलाउद्दीन खिलजी ने राणा भीमसिंह से साफ कहा।
मुझे पद्मनी को दे दो, मैं बात भले की बता रहा।।
बिना पद्मनी के राणा जी! मुझ पर जाता नहीं रहा।
अगर न दोगे रानी को मैं, खून की दूंगा नदी बहा।।
व्यर्थ न झगड़ा करो, सौंप दो, हे राणा! रूपानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
राणा भीम सिंह बोले, पापी तू भाग यहां से जा।
बात न तेरी मानूंगा मैं, तू पूरा ले जोर लगा।।
उत्तर सुनकर राणा का, खिलजी ने भारी जुल्म किया।
मारो, काटो रजपूतो को , सेना को था हुक्म दिया।।
मिटे वीर रजपूत युद्ध में, याद करो कुर्बानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
समाचार जब मिला सती को, नहीं पद्मनी घबराई।
जौहर व्रत निभाओं बहिनो! सखियों से वह फरमाई।।
चौदह सहस्त्र देवियों ने, रानी संग जौहर व्रत किया।
पतिव्रता भारत बालाएं, सकल विश्व को बना दिया।।
कभी न भूलेगी दुनियां, इस घटना दिल दहलानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
उस पतिव्रता देवी को, जो पापी दोष लगाएंगे।
कान खोलकर के सुनलो सब, वे पापी मिट जाएंगे।।
जो खाते-पीते भारत का, गीत पराए गाएंगे।
वे सब भारत के दुशमन हैं, जीवित ना रह पाएंगे।।
'नन्दलाल' अब जागो, युवको! करलो सफल जवानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।

-पं. नन्द लाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम बहीन, जनपद पलवल (हरि.)

मातृशक्ति बालक को स्वस्थ, बलवान् तथा प्रसन्न रखने के कुछ आवश्यक नियम

आजकल की आधुनिकता में जहां पति-पत्नी दोनों की अर्थ के लिए भागदौड़ में लगे रहते हैं। जिसका परिणाम उनके बच्चों को आगे चल कर भुगतना पड़ता है जबकि बालक का सदा प्रसन्नचित्त रहना अधिकतर उसकी माता के ऊपर निर्भर है। यदि माता सदा प्रसन्न रहती है, कभी क्रोध नहीं करती, सदा प्रेम से बालक का लालन-पालन करती है, तो बालक अवश्य प्रसन्न रहेगा।

– बालक को सदा स्वस्थ और निरोग रखने के लिए माता को अपने आहार पर सदा नियन्त्रण रखना चाहिए और सदा ऐसा ही भोजन करना चाहिए, जो उसके लिये और बालक के लिये आरोग्य तथा स्वास्थ्यप्रद हो।

– बालकों को सर्वोत्तम खुराक दूध ही है। अत: यदि माता का दूध बालक के लिए पर्याप्त न हो तो बालक को बकरी या गाय का दूध थोड़ा पानी डालकर दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा करके पिलाना चाहिए। यदि दूध उबालते समय रत्तीभर सोंठ बारीक की हुई डाल दी जाए तो दूध सुपाच्य तथा पौष्टिक हो जाता है।

– जहां तक हो सके बालक को शीशी से दूध नहीं पिलाना चाहिए। यदि विवशत: पिलाना ही पड़े तो प्रतिदिन शीशी को गर्म जल से धो देना चाहिए।

– माता को भोजन बनाते समय अथवा अन्य किसी परिश्रम आदि के कारण शरीर के गर्म या पसीना होने की अवस्था में दूध नहीं पिलाना चाहिए।

– बालक के दांत निकल आने पर बालक को माता का दूध शनै:-शनै: छुड़ा देना चाहिए और बकरी या गाय का दूध पिलाना चाहिए।

– जब तक कि बालक में स्वयं बैठने की शक्ति पैदा न हो जाए तब तक जबरदस्ती उसे बैठाना नहीं चाहिए अन्यथा बालक के कुबड़े आदि हो जाने का भय रहता है।

– बालक को तेज हवा, आंधी, बिजली या सूरज की तेज किरणों की चकाचौंध से बचाना चाहिए।

– बालक को सुनसान स्थान, तालाब, नदी तथा गढ्ढे के पास तथा बरसते मेह में नहीं छोड़ना चाहिए।

– बालक के हाथ में पैसा, जैसे – चवन्नी, अठन्नी, रुपया, बेर, सुपारी आदि ऐसी चीज़े नहीं देनी चाहिए इनके खाने से वह गले में अटक जायेगी या पेट में चली जाएंगी दोनों हालातों में बालक की जान का खतरा रहता है।

– बालक को अधिक समय तक गोदी में नहीं रखना चाहिए जिससे वह स्वेच्छापूर्वक हाथ- पैर हिला सके। इससे बालक का व्यायाम हो जाता है और उसका खाया-पिया पच जाता है।

– बालक को कभी भूत-प्रेत या चूहे, बिल्ली आदि का नाम लेकर डराना नहीं चाहिए। इससे एक तो बालक डरपोक बन जाता है तथा बड़े होने पर भी वह डरपोक ही बना रहता है। दूसरा भय के कारण उसके बीमार पड़ जाने की भी सम्भावना है।

– प्रथम तो बालक को लंघन कराना ही नहीं चाहिये और कराना भी पड़े तो और सब चीजें तो उससे छुड़ा सकते हैं किन्तु दूध कभी नहीं छुड़ाना चाहिए क्योंकि दूध ही बालक का जीवन है।

– बीमारी की हालत में केवल दूध पीते बालक को दवा नही देनी चाहिये प्रत्युत वह औषध उसकी माता को खिला देनी चाहिए।

यदि माता उपरोक्त नियमों का पालन करे तो निश्चित ही उसका बालक सदैव स्वस्थ, बलवान् तथा प्रसन्न रहेगा और शारीरिक विकास को प्राप्त होगा।

साभार : आदर्श गृहस्थ्य जीवन
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,मो. 9540040339

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रलिया, फिजी एवं न्यूजीलैंड की आर्यसमाजों का

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया : 24-25-26 नवम्बर, 2017 सम्पन्न

आस्ट्रेलिया में बसे भारतीयों ने अपनी वैदिक संस्कृति, अपने वैदिक धर्म के बहुमूल्य ज्ञान-विज्ञान को संजोने के साथ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्न के अलख को जागृत किया

आर्यसमाज सैन्ट्रल, न्यू साउथ वेल्स (आस्ट्रेलिया) में 24 से 26 नवम्बर तक सम्पन्न हुए क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश से वैदिक विद्वान और आर्यजन पहुंचे। आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के प्रधान कमल शर्मा जी ने जितेन्द्र डियो जी को अगले महासम्मेलन के लिए ध्वज पताका सौंपी। इस सम्मेलन में आस्ट्रेलिया के विभिन्न प्रान्तों से सभी आर्यजनों ने भाग लिया। शहर के मेयर स्टीफन बाली सहित अनेक गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का सुन्दर समापन हुआ

पुस्तक परिचय

मनुस्मृति

मनुस्मृति के विषय में भ्रांति निवारण के लिए आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. सुरेंद्र कुमार द्वारा लिखित मनुस्मृति भाष्य उपलब्ध है।

आखिर क्या है मनुस्मृति अब स्वयं पढ़िए और जानिए!

एक शेर जंगल में घास खा रहा हो और दूसरा मांसाहारी हो, क्या यह हो सकता है? या एक खरगोश वनस्पति और दूसरा कीड़े मकोड़े खाता हो? क्या दो खरगोश के अलग-अलग धर्म हो सकते हैं? सब कहेंगे नहीं, बिल्कुल नहीं तो सोचिये मनुष्य

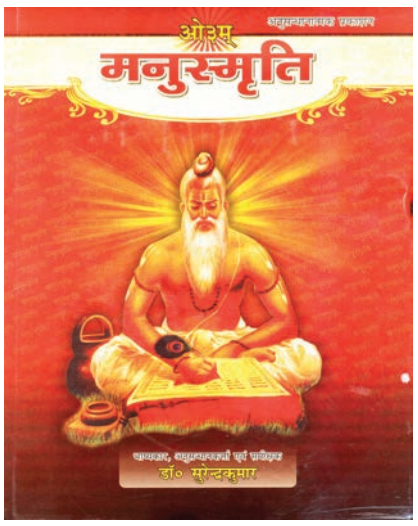

का धर्म अलग-अलग कैसे हो सकता है? आज के संसार में सबसे बड़ा प्रश्न हैं वास्तविक धर्म क्या है और धर्म कैसा होना चाहिए?

आप आये दिन नेताओं और बुद्धिजीविओं की बहस देखते होंगे महीने दो महीने में मनुस्मृति को लेकर भी बहस दिखाई देती है। तब बहुत लोग सोचते हैं आखिर मनुस्मृति में ऐसा क्या है जो ये बहस का विषय बनी है? दरअसल समाज के सामाजिक संविधान मनुस्मृति को लेकर लोगों के मन में बहुत सारी जिज्ञासायें खड़ी रहती हैं। सब जानते हैं प्राणीमात्र के लिए एक-सा होने से संसार भर के मनुष्यों का धर्म वेद है।

मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण कहे हैं और मनु सृष्टि के प्रथम शासक चक्रवर्ती (विश्व) के राजा हुए हैं उनका रचा स्मृति ग्रन्थ सब विद्वानों ने हर प्रकार से उच्च और श्रेष्ठ माना है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्या हैं क्यों आये दिन इन्हें लेकर बयानों के तीर चल रहे हैं? अक्सर लोग सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं लेकिन असल ज्ञान पढ़कर होता हैं। जब हम किसी चर्चा में होते हैं तो हमारे पास साक्ष्य मजबूत हो तो कोई हमें हरा नहीं सकता।

परमात्मा के बनाये हुए सूर्य, चन्द्र, तारे, जल, हवा, जमीन आदि का उपयोग सबके लिए है, किसी से ईश्वर ने भेदभाव नहीं किया और कर्मो का फल भी सबको भोगना पड़ता है चाहे मुसलमान हो या हिन्दू। इसका सबसे बड़ा प्रमाण ये है कि दोनों जातियों में सुख-दु:ख देखे जाते हैं। इसी प्रकार वेद का ज्ञान ईश्वर ने सबके लिए दिया है, कोई उसे आचरण में लाकर लाभ न उठाये तो इसमें ईश्वर क्या करें।

मन में उपजते सभी सवालों का जवाब जानिए मनुस्मृति में

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. नं. 9540040339

आर्य समाज द्वारा मायापुरी क्षेत्र में निरन्तर साप्ताहिक यज्ञों का आयोजन

दिल्ली के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्र मायापुरी के पार्क में 18वां रविवारीय यज्ञ एवं प्रवचन कार्यक्रम 19 नवम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ। इस क्षेत्र की झुग्गी- झोंपड़ी (जे.जे. कॉलोनी) में रहने वाले मजदूरों और गरीब परिवार के लोगों द्वारा यज्ञ किया जाता है। यज्ञ ब्रह्मा श्री सत्य प्रकाश शास्त्री थे। मायापुरी क्षेत्र में 30 जुलाई से प्रात: श्री रजनीश जी निरंतर यज्ञ का आयोजन करवा रहे हैं जिसमें श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती अमृता आर्य, श्रीमत सरिता अग्रवाल, श्री कर्मयोगी, श्रीमती सुनीता बुग्गा, श्री भगवान दास इत्यादि का सहयोग सदैव रहता है। ज्ञात हो मायापुरी में आर्य समाज की स्थापना का कार्य महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम.डी.एच. के आशीर्वाद से किया जा रहा है। सभी महानुभावों से आग्रह किया है कि यदि कोई आर्य परिवार मायापुरी क्षेत्र में रहते हों तो उसके नाम, पते जिस भी आर्यजन के पास हो वे निम्न महानुभावों को प्रदान की कृपा करें-

रजनीश वर्मा 9811362087
कर्मयोगी 8178993260, 9868161037

सत्यं शिवं सुन्दरम्
सत्य हमेशा कल्याणकारी एवं सुन्दर होता है। अत: सदा सत्य बोलें

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें। **-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9911160975**

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 Email : aryasabha@yahoo.com

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2018 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

Veda Prarthana - 22

Become the Master of the Soul and Destroy Your Vices

- Acharya Gyaneshwarya

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं
जहिश्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण
रक्ष इन्द्र।।

Ullookyatum
shushulookyatum jahi
schvayatum it kokyatum.
Suparnyatum grdhyatum drshad
eva pramrna raksha indra.

(Atharva Veda 8:4:22)

Human beings listen!

Indra your soul is indra because it is the master of mind and senses (indriyas), assert your soul's power and jahi remove, destroy ullookyatum your owl like habits of attachment to darknes and avoiding light or virtue, shushulookyatum your wolf like habits of cruelty and anger towards others, schvayatum your dog like habits of jealousy and fighting with your own kind,it and kokyatum your sparrow like habits of lust for sexual intercourse, suparnyatum your eagle like habits of vain pride of superiority over others, grdhyatum your vulture like habits of greed and miserly treatment of others, drshad eva pramrna raksha crush/pulverize all of these evil habits like a stone pestle crushes spices in a mortar or a millstone crushes grain.

The main difference between human beings and animals is that an animal's main goal in life is its own survival; one may call it being selfish or self-centered. Animals act on instinct and do not worry about morality i.e. whether the actions of the animal are morally right or wrong. Similarly, those persons who are totally self-centered and selfish are behaving like animals and are doing things with only one goal, 'What's in it for me, to hell with everybody else', and do not hesitate to do things even if they are bad, wrong or heinous as long as they can envision at least a temporary personal gain. hiowever, such actions are not hidden from the Omnipresent God's justice where He gives everybody an appropriate reward/punishment according to the person's deeds and the intent of the same deeds. While such a person may have a temporary material gain, yet the final result will be that the person's mind becomes full of anxiety, doubt, confusion and fear of being caught and in addition the mind will lack peace and harmony. Moreover, in next life the person will suffer further bad consequences by being reborn in lower life form such as an animal, bird, fish, insect etc. where the soul will have no freedom or free will while existing in a state of bondage bearing the consequences of previous bad deeds. In this mantra, God addresses all human beings and advises them to get rid of and destroy several of our animal like bad habits and vices using the example of six animals including four birds and two mammals.

The mantra further addresses the human soul as Indra because the soul is innately very strong and is the master of our mind and senses (in Sanskrit called indriya), even though the soul often acts/behaves like it is a slave to the mind and senses and not their master. The mantra advises the soul to again become the master of senses and the mind by asserting its executive will power to thoroughly crush and destroy the various vices and sinful tendencies promoted for their temporary gratification by the mind or senses (see next six paragraphs for details of the vices). For crushing the various vices the mantra uses the example of a large hard rock pulverizing small stones into sand, where as others have used the example of pestle and mortar crushing spices into a fine powder or a millstone crushing grain into flour.

The first example is that of an owl. The owl is a bird of prey that hunts small animals and birds. it prefers the night's darkness and avoids daylight. The mantra advises the soul to get rid of and destroy the soul's owl like habits of being attached to darknes i.e. ignorance and avoiding daylight, i.e. knowledge and virtue. Lgnorance due to lack of knowledge and/or wisdom is often the root cause of many bad habits or vices a person follows in life and then suffers the bad consequences of one's wrong actions. Because of ignorance one falls prey to wrong beliefs and practices such as lying, cheating or deceiving as a way to success. Others start to have blind faith in fraudulent gurus or leaders and their propaganda, and instead of doing hard work to succeed in life start looking for shortcuts or start believing in miracles which are illogical and impossible to be true as a route to success in life. Still others not only fall victims themselves but promote similar ignorance to others in the society. Such persons due to ignorance then start to have belief and faith in a wrong God as true God; adharma (non-virtue) as dharma (virtue); obvious injustice as appropriate justice; what is truly a moral loss as a gain; and what in the long haul will cause personal or societal suffering as source of long term happiness. The mantra states destroy your ignorance, instead become learned as well as with practice acquire right knowledge, wisdom and judgment.

The second example is that of a wolf. The wolf is considered to be a cruel, angry and mean animal, who initally hides from the prey, but then suddenly attacks and mercilessly starts to cut the prey to pieces. Similarly, there are human beings who are angry and mean and do not hesitate to deceive others, rapists and murderers who rob, rape of murder others respectively for wealth and/or warped pleasure. The mantra states that, O human being! Give up your habits of meanness, cruelty and anger towards others. Also, if you want to progress in life, acquire virtue, then only you will be happy and peaceful.

Yhe third example is that of a dog. The dog has the bad qualities of being very jealous and fighting with its own kind i.e. other dogs. While the dog has an outstanding quality of being very loyal and faithful to its master, yet it does so in the excess and without discrimination. For example, a dog will defend its master with bed vices (such as being drunk) and attack or hurt innocent virtuous persons with whom the master has picked an unnecessary or unjustified fight. The mantra advises us not to fight with our kin, friends and well-wishers, be loyal to our nation but at the same time not be loyal to accepting vices being promoted by the so called "friends and leaders."

The fourth example is that of a male sparrow which has excessive lust for having sexual intercourse with as many female sparrows as possible. The male sparrow spends most of its time running around, flying or chirping to attract another female sparrow to have sex with it. Similarly, a person addicted to the desire and/or the act of having a sexual intercourse loses sense of proper responsibilities, personal respect, decency, shame of social condemnation etc and chases after sexual gratification irrespective of the fact whether it is immoral e.g. cheating on one's spouse, or it is illegal e.g. sexual predators, child molesters. The end result is that sch a person gradually ends up wasting his resources including time, energy, health and wealth. In addition, the person emotionally suffers from anxiety, the fear of being caught or the shame of being actually caught, divorce and loss of respect from children, social condemnation, depression, ill health, venereal diseases and finally early death.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ - 31 (ब)
विभिन्न पदार्थों व क्रियाओं के नाम

गतांक से आगे....

सूर्यः ।
चन्द्रः ।
अर्धचन्द्रः ।
नक्षत्रम् ।
मेघः ।
क्रीडनकम् ।
गृहम् ।
भवनम् ।
सूर्योदयः ।
सूर्यास्तः ।
सेतुः ।
उडुपः (small boat)
नौका ।
गगनयानम्/विमानम् ।
भारवाहनम् ।
भारतध्वजः ।
1 एकम् ।
2 द्वे ।
3 त्रीणि ।
4 चत्वारि ।
5 पञ्च ।
6 षट् ।
7 सप्त ।
8 अष्ट/अष्टौ ।
9 नव ।
10 दश ।
20 विंशतिः ।
30 त्रिंशत् ।
40 चत्त्वारिंशत् ।
50 पञ्चिशत् ।
60 षष्टिः ।
70 सप्ततिः ।
80 अशीतिः ।
90 नवतिः ।
100 शतम।
वामतः ।
दक्षिणतः ।
उपरि ।
अधः ।
चलच्चित्र ग्राहकम् ।
नल्लिका ।
जलशीतकम् ।
यानपेटिका ।
तरङ्ग सूचकम् (तरङ्गाः)
+ सङ्कलनम् ।
- व्यवकलनम् ।
x गुणाकारः ।
÷ भागाकारः ।
% प्रतिशतम् ।
@ अत्र (विलासम्) ।
श्वेतः ।
नीलः ।
रक्तः ।
कृष्णः ।

- क्रमशः -

आ० सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

वह शेषराव मर गया

दीना नगर में दयानन्द मठ की यज्ञशाला के समीप भीमकाय महात्मा आनन्दमुनिजी खड़े थे। इन पंक्तियों के लेखक ने कहा, 'मेरे पास आपका वह ऐतिहासिक चित्र है जो शोलापुर में सत्याग्रह के दिनों में स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के साथ खींचा गया था।

आप झट से बोले, ''वह शेषराव मर गया। यह आनन्दमुनि है।''

ऐसी पवित्र भावना को लेकर जो आश्रम बदलते हैं, वे धन्य हैं।

महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन नान्देड़ में हुआ। तब सभा के प्रधान आप ही थे। आपकी बड़ी बेटी (पत्नी प्रो. हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर) ने वानप्रस्थ की तैयारी करने के लिए एक वर्ष का समय आर्यसमाज को दिया। इस बात की घोषणा करते हुए एक देवी ने उनके नाम के साथ 'बाघमारे' कहा। महात्मा आनन्दमुनिजी ने झट से कहा। उसके पतिकुल का नाम लीजिए।''

हमारे पूज्य पुरुष मर्यादा का इतना ध्यान रखते थे।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज कीर्तिनगर का 21वां स्थापना दिवस

आर्य समाज कीर्तिनगर के तत्त्वावधान में आर्यवीर दल शाखा 3 दिसम्बर सायं 4:30 बजे एस.डी. पब्लिक स्कूल रामा रोड, के दिल्ली में 21वें स्थापना दिवस आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम में आयवीर एवं आर्य वीरांगनाएं संगीतमय रामायण पर नृत्य नाटिका, देश भक्तिपूर्ण गीत तथा लगभग 100 आर्य वीर एवं वीरांगनाएं अपने-अपने यज्ञ कुण्ड पर यज्ञ करेंगे।

-सतीश चढ्ढ़ा, मन्त्री

वेद प्रचार पर्व सम्पन्न

आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी का वेद प्रचार पर्व धूमधाम के साथ 26 नवम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ यज्ञ ब्रह्मा आचार्य देवेन्द्र जी थे। तदुपरान्त श्रीमती सुदेश आर्या जी ने अपने सुमधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया। डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने अपने प्रचवन में महर्षि के बताए सद्मार्ग पर चलकर ही जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव है पर प्रकाश डाला।

- मन्त्री

वैदिक पुस्तकालय हेतु पुस्तकें दान दें

सभी आर्य भद्र महापुरुषों और माताओं-बहनों को सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विशेष व विशाल पुस्तकालय निर्माण की तैयारी आरम्भ की जा चुकी है। यह पुस्तकालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। इस पुस्तकालय में सम्पूर्ण वैदिक वाड्.मय ''ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण साहित्य के सभी संस्करण, ऋषि दयानन्द और अन्य सभी आर्य महापुरुषों के जीवन-चरित्र, राष्ट्रीय एवं आर्य समाज विषयक ऐतिहासिक पुस्तकें, विभिन्न मत-सम्प्रदायों से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में साहित्य का संग्रह एक ही पुस्तकालय में उपलब्ध करवाने का प्रयास है। प्राचीन और नवीन हर तरह की पुस्तकें इस पुस्तकालय में संग्रहीत होगी। इस पुस्तक संग्रहालय में साहित्य को सुरक्षित करने की भी विशेष योजना है।

नोट : यदि आपके पास ऐसी कोई विशेष पुस्तकें हो जो वर्तमान समय में अप्राप्त है तो आप ऐसी पुस्तकें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को पुस्तकालय हेतु दान दे सकते हैं। **दानदाता कृपया सम्पर्क करें** - ***आचार्य दिनेश शास्त्री***

मो. 7597454681, 7737904950

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन

सभी धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि आर्य समाज के कार्यों और देश-धर्म सम्बन्धित कार्यों में विशेष योगदान और सेवाएं प्रदान करने वाले आर्य नेताओं, आचार्यों, विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों और आर्य वीर-वीरांगनाओं से सम्बन्धित विशेष घटनाएं जैसे विधवा-विवाह, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, वेद-प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, जात-पात बंधन आदि से सम्बन्धित या कोई अन्य प्रेरक प्रसंग आदि की जानकारी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई हो और आपकी जानकारी में है तो आप कृपया **सम्पादक** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ई मेल कर दीजिए। हमारा प्रयास रहेगा कि आपके द्वारा प्रेषित सूचना/घटनाक्रम को प्रकाशित कराया/किया जाए। - ***सम्पादक***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

केरल में स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केरल में 9 दिवसीय स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2 का **20-28 मार्च 2018** में आयोजन किया जा रहा है। **कुल यात्रा व्यय हवाई जहाज से 17500/- रुपये है।** इसमें होटल आवास, भोजन एवं हवाई यात्रा दो दिन मुन्नार एवं एक दिन ऐलैपी बैक वाटर्स भ्रमण भी सम्मिलित है। 4 दिवसीय स्वाध्याय शिविर में **महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र कालीकट** में आयोजित होगा जिसमें विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। सीमित 40 सीटें। पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर व्यवस्था। प्रस्थान हवाई जहाज से 20 मार्च की प्रात: तथा वापसी 28 मार्च की रात्रि में होगी। जो आर्यजन सम्मिलित होना चाहें वे **संयोजक श्री शिवकुमार मदान (मो. 9310474979)** से सम्पर्क करें। **-महामन्त्री**

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के युवक, एम.सी.ए., डिप्लोमा (फोटोग्राफी), 30 वर्ष, लम्बाई 5'8'', सांवला, फोटोग्राफर, शाकाहारी, आय औसतन 50 हजार मसिक, हेतु आर्य परिवार की समकक्ष, सुशिक्षित वधू चाहिए। जाति-दहेज का कोई बन्धन नहीं। इच्छुक परिवार सम्पर्क करें-

मो. 9643152079, 9868997599, 9873988003, 011-27018041

Email : rajeev98739@gmail.com, savita595@gmail.com

शोक समचार

आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री को मातृशोक

आर्य समाज मंदिर ए ब्लॉक डेरावल नगर दिल्ली के धर्माचार्य आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री की पूज्य माता जी श्रीमती राजवती देवी का निधन 24 नवम्बर 2017 को हो गया।

शांति यज्ञ 27 नवम्बर को आचार्य कुंवरपाल शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्रद्धांजलि सभा में निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों ने सदस्यों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

म्यांमा सभा के पूर्व प्रधान डॉ. यशपाल गांधी दिवंगत

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के पूर्व प्रधान डॉ. यशपाल गांधी का लम्बी बीमारी के बाद 15 नवम्बर 2017 को भारत में निधन हो गया। उनके पिता श्री हरवंशलाल जी मोगोक आर्य समाज के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के वर्ष 1961 से वर्ष 1976 तक प्रधान रहे। डॉ. की उपाधि प्राप्त कर लेने के बाद डॉ. यशपाल जी का विवाह माण्डले निवासी श्री सोहनलाल जी वर्मा की सुपुत्री सुश्री शशि प्रभा से हुआ।

आपने प्रधानत्व काल में डॉ. गांधी जी ने सभी आर्यसमाजों एवं आर्यजनों को एकता के सूत्र में पिरोकर कार्य किया। आपने तथा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि प्रभा ने सत्संग गुटका का म्यांमा भाषा में अनुवाद कर स्वयं अपने खर्चे पर प्रतिनिधि सभा के नाम प्रकाशित करवाया तथा आर्य गुरुकुल का उद्घाटन 1 मार्च 2012 को आर्य समाज मन्दिर जियावडी में किया।

वर्ष 2010 लाश्यो में डॉ. यशपाल गांधी एक मोटर दुर्घटना में दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद लगभग 7 वर्ष रुग्णशैया पर ही रहे। वे अपने इलाज के सिलसिले में आप भारत आये हुए थे। अस्वस्थ होने के बाद भी आप व आपकी धर्मपत्नी सामाजिक व धार्मिक कार्यों में दिलखोलकर उदारता पूर्ण दान करती रहीं। वर्तमान वर्ष 2017 के आर्य महासम्मेलन माण्डले में 20 लाख रुपया दान प्रदान कर सम्मेलन में भाग लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30नवम्बर – 1 दिसम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 नवम्बर, 2017

अवश्य देखें आर्यसमाज की वैबसाइट

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

33 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। – महामन्त्री

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से
जोड़िए अपने मित्रों को और
दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह